चेतना की तरंगें

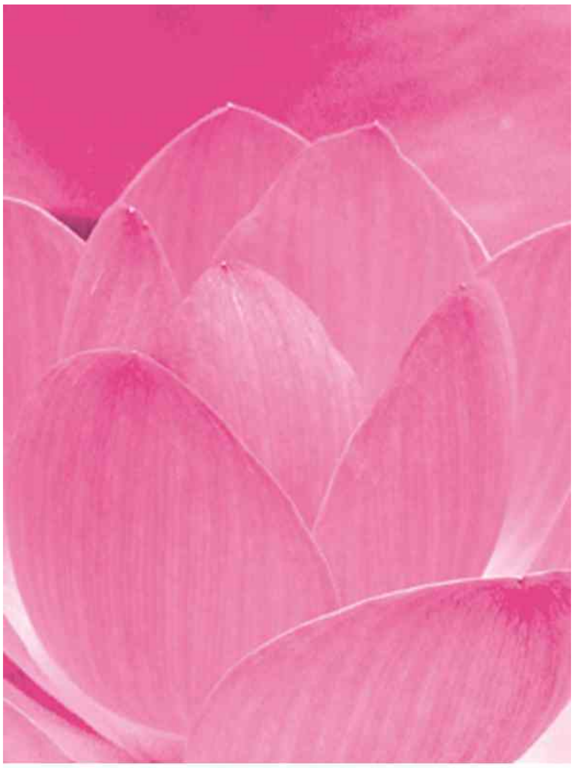

धम्मपद का सूत्र है—

'जो धीर ध्यान में लगे हैं, परम शांत निर्वाण में रत हैं, उन स्मृतिवान संबुद्धों की स्पृहा देवता भी करते हैं।' अब इस कथा को समझने की कोशिश करें। देवता शब्द से बहुत परेशान मत हो जाना। अकेला भारत ऐसा देश है, जिसने ध्यान की गहरी गहराइयों में प्रवेश किया है। या ध्यान की ऊंची ऊंचाइयों में गया है। अकेला भारत ऐसा देश है, जिसको यह बात साफ हो गयी है कि आदमी सबसे ऊपर नहीं है। मनुष्य से ऊपर भी चैतन्य की दशाएं हैं, देवता का इतना ही अर्थ होता है। जैसे मनुष्य के नीचे पशु-पक्षी हैं, ऐसे मनुष्य के ऊपर देवता हैं, देवताओं की कोटियां हैं।

और यह बात तर्कयुक्त मालूम पड़ती है, क्योंकि मनुष्य अंत हो भी क्यों? आखिर मनुष्य पर सारा विकास रुके भी क्यों? मनुष्य मध्य में है। पीछे बड़ी यात्रा है और आगे बड़ी यात्रा है। स्वभावतः जो पीछे हो गया, वह तो हमें दिखायी पड़ता है, क्योंकि वह हो चुका। जो अभी आगे होने को है, वह हमें दिखायी नहीं पड़ता; क्योंकि वह हो चुका। जो अभी आगे होने को है, वह हमें दिखायी नहीं पड़ता; क्योंकि अभी हुआ नहीं है तो दिखायी कैसे पड़े? इसलिए देवता दिखायी नहीं पड़ते हैं।

देवता का अर्थ है, हमारी संभावनाएं। देवता का अर्थ है, हमारे चित्त की ऊंची तरंगें। हम जिस तरंग पर जी रहे हैं, इससे भी ऊंची तरंगें चित्त की हैं। कभी किसी आदमी को देखकर तुम्हें लगता है कि मन कह उठता है, देवता है। क्यों कह उठता है मन? क्योंकि आदमी जैसा आदमी है, हड्डी-मांस-मज्जा है! लेकिन फिर भी लगता है, चेतना किसी और तल पर है, कहीं और है।

देवता का अर्थ समझ लेना। देवता का अर्थ होता है, मनुष्य से ऊपर शुद्ध चैतन्य की और तरंगें। लेकिन एक और अनूठी बात भारत को खोज में आयी है। और वह अनूठी बात यह है कि देवता भी अंतिम अवस्था नहीं है। अंतिम अवस्था बुद्धत्व है। और बुद्धत्व को पाने के लिए मनुष्य चौराहा है। मनुष्य के नीचे पशु-पक्षी हैं, उनको भी अगर बुद्ध होना हो तो मनुष्य तक आना पड़ेगा। मनुष्य चौराहा है। और मनुष्य के ऊपर देवता हैं, देवताओं की अनेक कोटियां हैं। लेकिन उनको भी अगर बुद्ध होना हो, उनको भी मनुष्य तक आना पड़ेगा।

ऐसा ही समझो कि जब भी तुम्हें राह बदलनी हो तो चौराहे पर आना पड़ता है। तुम चले गए स्टेशन की तरफ, तुम आगे निकल गए चौराहे से। लेकिन अब तुम्हें राह बदलनी है, तुम्हें नदी की तरफ जाना है, तो तुम वापस चौराहे पर लौटते हो, क्योंकि चौराहे ही से रास्ता नदी की तरफ जाता है।

मनुष्य चौराहा है। इस सारे अस्तित्व का चौराहा है मनुष्य। उससे पीछे की तरफ भी रास्ते जाते हैं, आगे की तरफ भी रास्ते जाते हैं। और अतिक्रमण की तरफ भी रास्ते जाते हैं। सबसे ऊपर तो अतिक्रमण की दशा है—बुद्धत्व।

बुद्धत्व का अर्थ है, मन समाप्त हो ही गया। देवता का अर्थ है, मन की तरंगें और सुंदर और प्रीतिकर हो गयीं। मनुष्य की तरंगें उतनी सुंदर नहीं, उतनी प्रीतिकर नहीं। देवता की तरंगें प्रीतिकर हैं, सुंदर हैं। नारकीय का अर्थ है, मनुष्य से भी नीचे गिर गयीं तरंगें और दुख हो गया। इसलिए हम कहते हैं, नरक में दुख है, स्वर्ग में सुख है। सुख का मतलब इतना ही होता है कि तुम्हारी तरंगें सुख को पकड़ने में ज्यादा समर्थ हो गयीं। दुख का अर्थ इतना ही होता है कि तुम्हारी तरंगें दुख को पकड़ने में ज्यादा समर्थ हो गयीं।

तुमने कभी खयाल किया, दो आदमी एक ही जगह बैठें हों, एक सुखी हो सकता है, एक दुखी हो सकता है। दो आदमी एक ही अवस्था में हों, एक सुखी हो सकता है, एक दुखी हो सकता है। क्या कारण होगा? तुम्हारा

चित्त क्या पकड़ता है, इस पर सब निर्भर है। अल्डुअस हक्सले पश्चिम का एक बड़ा विचारक था। उसने जीवन भर बड़ी अनूठी किताबें इकट्ठी कीं। बड़ा संग्रह था उसके पास किताबों का। और अनूठे-अनूठे ग्रंथ इकट्ठे किए थे। और एक दिन अचानक आग लग गयी। वह जीवनभर उन्हीं को इकट्ठा करता रहा था।

उसकी पत्नी लारा हक्सले ने तो समझा कि वह एकदम गिर ही पड़ेगा, उसका हार्ट फेल हो जाएगा। यह तो उसका प्राण था। किताब पर दीमक न लग जाए, किताब पर सीलन न आ जाए, ऐसी फिकर करता था। चौबीस घंटे किताबों में ही रत था। उसकी सारी की सारी संपदा जीवन की जलकर राख हो गयी। पत्नी तो घबड़ायी। पत्नी को किताबों में कुछ लेना-देना भी नहीं था, मगर यह पति को क्या हो जाएगा, कहा नहीं जा सकता! वह उसके बगल में ही खड़ी है। और लपटें उठती गयीं, बहुत बुझाने की कोशिश की गयी, लेकिन सब मकान राख हो गया।

अकेला भारत ऐसा देश है, जिसने ध्यान की गहरी गहराइयों में प्रवेश किया है। या ध्यान की ऊंची ऊंचाइयों में गया है। अकेला भारत ऐसा देश है, जिसको यह बात साफ हो गयी है कि आदमी सबसे ऊपर नहीं है। मनुष्य से ऊपर भी चैतन्य की दशाएं हैं, देवता का इतना ही अर्थ होता है। जैसे मनुष्य के नीचे पशु-पक्षी हैं, ऐसे मनुष्य के ऊपर देवता हैं, देवताओं की कोटियां हैं

लेकिन लारा बहुत चौंकी, क्योंकि हक्सले चुपचाप खड़ा देख रहा है। दुखी भी नहीं मालूम होता, बेचैन भी नहीं मालूम होता, बल्कि एक तरह की प्रसन्नता उसके चेहरे पर झलक रही है। उसने कहा कि मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा, आप और प्रसन्न! कभी कोई एक किताब बच्चा फाड़ दे, या लकीर खींच देता था तो आप ऐसे नाराज हो जाते थे। अगर एक किताब खो जाती थी तो आप दीवाने हो जाते थे, रात सो नहीं सकते थे। अगर कोई मित्र किताब मांगता था तो आप देते नहीं थे, डरते थे कि कहीं लौटाए, न लौटाए। मित्रता चाहे खो जाए, किताब देने को राजी न थे। और आज सब जलकर राख हो गया है, आप प्रसन्नता से खड़े हैं? हक्सले ने कहा, मैं भी चौंककर देख रहा हूं और बड़े आश्चर्य की बात है—तुम्हीं चकित नहीं हो, मैं भी चकित हूं—ऐसा लग रहा है कि मन से एक बोझ उतर गया। हल्का हो गया। इतना हल्का मैं कभी भी नहीं था। प्रभु की कृपा! यह बोझ गया। यह बोझ उतर गया। यह मेरा मोह था, यह भी गया। अच्छा ही हुआ। यह अचानक लगी आग सौभाग्य है।

इसको कहेंगे, देवता। इसके मन की तरंग दुख में से भी सुख को पकड़ लेती है। मुल्ला नसरुद्दीन को लाटरी मिल गयी। लाख रुपए मिल गए। भागा हुआ घर आया। और पत्नी को कहा, खुशी मनाओ, नाचो-गाओ। पास-पड़ोस की स्त्रियों से बैठी पत्नी उसी की निंदा कर रही थी। पत्नियां और

करें भी क्या! और यह बीच में आ गया और उसने लाकर लाख रुपए एकदम बीच में रख दिए और कहा, देखो, लाटरी मिल गयी! पत्नी ने कहा, लाटरी छोड़ो, पहले यह बताओ कि तुमने जो टिकिट खरीदी, वह रुपया कहां से पाया? क्योंकि वह सब नगद रखवा लेती है तनख्वाह पर। यह रुपया आया कहां से?

यह एक नारकीय चित्त है। लाख रुपए आ गए, उसकी खुशी नहीं है। उसने कहा, यह छोड़ो लाटरी-माटरी, पहले यह साफ करो कि रुपया तुमने हो। किन्हीं-किन्हीं क्षणों में तुम भी जीवन में प्रकाश देख पाते हो,

पाया कहां से जिससे टिकिट खरीदी? आदमी आदमी में फर्क हैं। तुम भी अपने भीतर जांचना। और ऐसा भी नहीं है कि तुम सदा एक ही अवस्था में होते हो। कभी-कभी तुम नारकीय अवस्था में होते हो, कभी-कभी स्वर्गीय अवस्था में होते हो। किन्हीं-किन्हीं क्षणों में तुम भी बड़े उदार होते हो, कि सब दे डालो। और किन्हीं क्षणों में बड़े कृपण हो जाते हो। किन्हीं-किन्हीं क्षणों में तुम भी जीवन में प्रकाश देख पाते हो, किन्हीं-किन्हीं क्षणों में सब अंधेरी रात हो जाती है। तुम भी नकारात्मक और विधायक में डोलते रहते हो। कभी सुबह अचानक तुम पाते हो, कितना सब हल्का! और किसी दिन अचानक पाते हो, सब बोझ, भारी। मर ही जाते तो अच्छा था, क्या सार! कभी असार में सार दिखता है और कभी सार में भी सार नहीं दिखता।

तो ऐसा मत सोचना कि देवता कहीं आकाश में रहते हैं और नारकीय कहीं दूर पाताल में रहते हैं। तुम भी कभी-कभी देवता हो जाते हो और कभी-कभी नारकीय हो जाते हो। कभी-कभी पशु हो जाते हो और कभी-कभी परमात्मा हो जाते हो। क्षणभर को कभी तुम भी झलक जाते हो प्रकाश से। तुम भी भर जाते हो रस से। उन्हीं क्षणों में तुम प्यारे आदमी हो जाते हो। उन्हीं क्षणों में लोग तुम्हें प्रेम करने लगते हैं। उन्हीं क्षणों में लोग तुम्हारे मित्र हो जाते हैं। लेकिन वे क्षण टिकते नहीं, खो-खो जाते हैं। देवता का अर्थ है, जिसने उन ऊंचाइयों पर रहना थिर कर लिया।

लेकिन देवता भी आखिरी अवस्था नहीं है। देवता को सुख तो ज्यादा है, लेकिन जहां सुख है, वहां दुख की संभावना सदा मौजूद रहती है। जहां दिन है, वहां रात होगी। विपरीत बना रहेगा। बुद्धत्व का अर्थ है, न दिन रहा, न रात। बुद्ध की अवस्था दोनों के पार है, द्वंद्व के पार है।

इसलिए जब कभी कोई बुद्धत्व को उपलब्ध होता है, तो उसमें सभी उत्सुक होते हैं। उसमें पशु-पक्षी भी उत्सुक हो जाते हैं, उसमें देवता भी उत्सुक हो जाते हैं, उसमें मनुष्य भी उत्सुक हो जाते हैं। उसमें बुरे से बुरे आदमी भी उत्सुक होते हैं, उसमें भले से भले आदमी भी उत्सुक होते हैं। जिसमें भले ही भले आदमी उत्सुक हों, वह महात्मा है। जिसमें बुरे ही बुरे आदमी उत्सुक हों, वह असंत। और जिसमें भले और बुरे दोनों तरह के आदमी उत्सुक हो जाएं, वह बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति। क्योंकि बुरे को भी उसमें से द्वार दिखायी पड़ता है, भले को भी द्वार दिखायी पड़ता है। इसलिए जब भी कहीं कोई बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति होगा, तुम उसके पास बुरे से बुरे आदमी पाओगे, भले से भले आदमी पाओगे। उसके पास एक समागम होगा। मनुष्यों का, पशुओं का, देवताओं का एक सन्निपात होगा।

अगर तुम कहीं जाओ और अच्छे-अच्छे आदमी पाओ तो समझना कि महात्मा है। अगर बुरे ही बुरे आदमी पाओ तो समझना कि कोई अपराधी। जहां तुम्हें दोनों तरह के लोग मिल जाएं, वहां तुम समझना कि कोई बुद्धत्व को उपलब्ध हुआ है। क्योंकि वहां दोनों की आतुरता है। बुरा भी पार होना चाहता है और भला भी पार होना चाहता है। बुरा बुरे से थक गया है, भला भले से थक गया है। बुरा दुख से थक गया है, भला सुख से थक गया है। वहां गरीब को भी पा लोगे, अमीर को भी पा लोगे। वहां अपढ़ को भी पा लोगे, पढ़े हुए को भी पा लोगे। वहां तुम सब तरह के द्वंद्व एक साथ पा लोगे। जहां सब द्वंद्व एक साथ उत्सुक हो जाते हैं, उसका अर्थ है, वहां से कोई संक्रमण है। वहां से कोई संक्रांति घट सकती है।

यह कथा मीठी है। इस घड़ी में बुद्ध ने ये सूत्र कहे-

'ये धीर ध्यान में लगे हैं, परम शांति में रत हैं, उन स्मृतिवान संबुद्धों की स्पृहा देवता भी करते हैं।'

'मनुष्य का जन्म पाना दुर्लभ है; मनुष्य का जीवित रहना दुर्लभ है; सद्धर्म का श्रवण करना दुर्लभ है, और बुद्धों का उत्पन्न होना दुर्लभ है।'

किच्छो मनुस्सपटिलाभो किच्छ मच्चान जीवितं।
किच्छं सद्धम्मसवणं किच्छो बुद्धानं उप्पादो।।

बुद्ध कहते हैं, पहले तो मनुष्य का जन्म पाना दुर्लभ है। क्योंकि मनुष्य तो बहुत थोड़े हैं, पशु-पक्षी, पत्थर कितने हैं! अनंत! तो पहले तो इतनी सारी योनियों को खोजते-खोजते कोई आदमी मनुष्य हो पाता है।

'मनुष्य का जन्म पाना दुर्लभ है।'

और जन्म भी पाकर क्या होता है, मनुष्य की तरह जीवित रहना और भी मुश्किल है। बहुत से लोग मनुष्य की तरह जन्म पा लिए हैं, लेकिन मनुष्य हैं नहीं। शक्ल-सूरत से मनुष्य हैं, रंग-ढंग से मनुष्य हैं, भीतर अभी भी पशुता भरी है। भीतर अभी भी पशु के ढंग से ही जी रहे हैं। भीतर अभी भी पाशविक आकांक्षाएं भरी हैं।

तो पहले तो मनुष्य का जन्म पाना दुर्लभ, फिर मनुष्य होकर जीना और दुर्लभ है। फिर अगर मनुष्य होकर जीना भी आ जाए, तो सद्धर्म का श्रवण करना दुर्लभ है। क्योंकि जिन लोगों को थोड़ी सी मनुष्यता का रस आ जाता है, उन्हें बड़ा अहंकार जगता है। वे अपने को कुछ समझने लगते हैं। कोई कहता है, मैं ज्ञानी हूं; कोई कहता है, मैं त्यागी हूं; कोई कहता है, मैं यह हूं; कोई कहता है, मैं वह हूं; देखो मैंने कितना शुभ किया, कितनी सेवा की। तो अहंकार पकड़ता है। और जब अहंकार पकड़ता है, तो श्रवण मुश्किल हो जाता है।

फिर किसी के चरणों में जाना, सद्धर्म को सुनना, बहुत मुश्किल हो जाता है। तो फिर सद्धर्म का श्रवण करना दुर्लभ है। और अगर श्रवण की क्षमता भी हो, तैयारी भी हो, तो बुद्धपुरुष को पाना बहुत मुश्किल है, कि जिसको सुनकर कुछ हो जाए। जिसको मात्र सुनने से कुछ हो जाए। श्रवणमात्रेण।

'और बुद्धों का उत्पन्न होना अति दुर्लभ है।'

— ओशो

एस धम्मो सनंतनो, भाग-7, प्रवचन-63

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)